इनकी नज़रों से दादी जी...

दादी हमारी भाग्यविधाता

मैं स्कूल की छुट्टियों में मधुबन आ जाती थी। दादी जी हमेशा मुझे कहती थीं कि दादी की नज़र तुम पर है और उस नज़र ने मुझे हमेशा उनके करीब रखा। जब `ओम शांति भवन' में हम दोनों बहनें अव्यक्त बापदादा से मिलने गये तो दादीजी एवं सभी वरिष्ठ भाई-बहनें चाहते थे कि हम कॉलेज की पढ़ाई न पढ़कर ईश्वरीय सेवाओं में अपना योगदान दें, जबकि हमारी इच्छा थी कि हम आगे पढ़ाई करें। ऐसे में अव्यक्त बापदादा ने कहा कि पढ़ाई की ज़्यादा ज़रूरत नहीं है, आप सेवा में लग जाओ। किंतु दादी जी का विश्वास था कि ये पढ़ाई पूरी करके सेवा में लग जायेंगी, तब बाबा ने भी इज़ाज़त दे दी। तब से लेकर आज तक मैं गामदेवी सेवाकेन्द्र पर अपनी सेवायें दे रही हूँ। मुझे गामदेवी सेवाकेन्द्र पर जाने के बाद पता चला कि यह तो दादीजी की खुद की सेवा की कर्मभूमि है। – ब्र.कु. निहा,गामदेवी क्षेत्र,मुम्बई

जब मिला मुझे किसी महान आत्मा का सहारा

सन्1992 में मैं बच्चों का ग्रुप लेकर मधुबन गई। 20-22 बच्चों के ग्रुप में कुछ बच्चों के वापसी टिकट नहीं थे। मैं इसके लिए ओमप्रकाश भाई जी से मिलती और पूछती। निकलने से एक दिन पहले भी टिकट कनफर्म नहीं हुई थी। भाई जी ने मुझे तसल्ली देते हुए कहा कि हो जायेगा। रात्रि भोजन के बाद मैं रेलवे टिकट ऑफिस से बाहर गलियारे से किचन भण्डारे की तरफ जा रही थी, कि तभी दादी जी रास्ते में मिल गईं। दादी ने मुझसे पूछा कि कहाँ से आई हो, कितने बच्चे आये हैं, सबकी टिकट हो गई है? टिकट हो गई है - यह सुनते ही लगा जैसे अब सब ठीक हो जायेगा। मैंने सारी स्थिति दादी को बताई तो उनका अपनत्व तथा प्यार भरे शब्दों में तसल्ली देना कि अच्छा, मैं ओम प्रकाश से बात करूंगी, तो दो दिन से जो चिंता थी कि कैसे इतने बच्चों को बिना टिकट ले जाऊंगी, वो दादी से मिलकर कहाँ लुप्त हो गई ये पता ही नहीं चला। जब भी दादी जी की ऐसी कुछ बातें याद आती हैं, ऐसा लगता है जैसे दादी जी दिनचर्या में सर्व की परेशानियों को, उलझनों को सुलझाते, सबकी दुविधा को मिटाते, बाप समान फरिश्ता रूप प्रत्यक्ष करते जा रहे थे।

– ब्र.कु. प्रभा,डिफेन्स कॉलोनी, दिल्ली

जुड़ी हुई कोई भी चीज़ व लोग मुझे खुशी नहीं दे सकते

गतांक से आगे...

प्रश्नः– हमने अपनी खुशी का आधार दूसरों को बना रखा है, तभी तो कोई भी आता है और हमारे दिल को खराब करके चला जाता है।

उत्तरः– लेकिन हमें अपना ध्यान रखना है। आज लिस्ट बनाकर देखते हैं। जब हम `स्व परिवर्तन' की यात्रा पर हैं तो थोड़ा-थोड़ा होमवर्क भी अपने साथ करते जाएं। हम क्या करें, एक है कि हम सुन रहे हैं, सुनते-सुनते कह रहे हैं हाँ, अच्छा है, सुनते-सुनते ये भी सोचते हैं कि ठीक ही तो है ना, आसक्ति है तो उसे छोड़ देना चाहिए। लेकिन इसके ऊपर आपको थोड़ा सा मेहनत करना पड़ेगा। आप समय निकालकर अपने साथ बैठें और बातें करें। हमें जितनी बार भी समय मिलता है तो हम टी.वी. के सामने ही जाकर बैठ जाते हैं। समय है लेकिन हम उस समय को किस तरह से उपयोग कर रहे हैं?

प्रश्नः– कई लोग कहते हैं कि समय है तो अब हम क्या करें, हमारे पास कुछ करने को होता ही नहीं है, तब हम ढूंढ़ते हैं कि उस समय हम क्या करें?

उत्तरः– उस समय को अपने लिए उपयोग करें। अब आज या कल नहीं, जल्दी ही अपनी एक छोटी सी लिस्ट बनायें और जैसे-जैसे हम एक-एक आसक्ति लिखते जाते हैं तो हमें जीवन की सच्चाई का पता चलने लगता है। अब हम एक दृश्य की अनुभूति करें कि अगर मेरे जीवन में चाहे वो लोग, चाहे वो वस्तु, चाहे वो पद, कोई चीज़ नहीं है तो मेरा जीवन कैसा होगा?

आप थोड़ी देर के लिए उनको जाने दो तो उसके बाद आपको महसूस होगा कि आपका जीवन कैसा चलेगा! अब आप उनके साथ जीवन में रहो लेकिन बिना किसी आसक्ति के, कोई भी चीज़ नहीं जायेगी, न वस्तु जायेंगे, न लोग जायेंगे। नहीं तो वही लोग, वही रिश्ते जिनका उद्देश्य था कि हम खुशी क्रियेट करें उन्हीं सारी चीज़ों के साथ हम जुड़ जाते हैं।

प्रश्नः– एक थॉट ही मुझे कितना तनाव देता है या डर होगा या कुछ भी होगा कि जिनके साथ अभी मैं अटैच्ड हूँ, अब हम यह कोशिश करेंगे कि पहले तो हमें यह महसूसता हो कि हम इन चीज़ों के साथ या इन लोगों के साथ अटैच्ड हैं। दूसरी बात कि अब मुझे पता नहीं चल रहा है कि आसक्ति से बाहर कैसे आना है? तो आपने कहा कि उसकी लिस्ट बनाते ही हर आसक्ति के साथ मैं ये कल्पना करूं कि वो मेरे पास नहीं है तब मैं कैसे जी रही हूँ? ऐसा सोच करके ही मुझे दर्द या तनाव महसूस हो सकता है।

उत्तरः– यह प्रमाण है कि यह कितनी गहरी आसक्ति है। उसको धीरे-धीरे मुझे महसूस करना पड़ेगा और अपने-आपको समझना पड़ेगा कि मुझे खुशी या डर किस बात की होती है कि ये चले जायेंगे तो इनके साथ-साथ क्या जायेगा।

प्रश्नः– मैं अकेली कैसे रहूंगी?

उत्तरः– शारीरिक नहीं, तो मेरी खुशी इनके साथ चली जायेगी। तो जैसे आप उसको मन से छोड़ते हो तो आप उसी तरह यह भी थॉट क्रियेट करो कि मेरी खुशी इन पर निर्भर नहीं है। इनके बिना भी मैं खुश हूँ। इनसे जुड़ी हुई कोई भी चीज़ या कोई लोग मुझे खुशी नहीं दे सकते हैं। और इसी बात का डर हमें सदा परेशान करता है। तो लेट देम गो एण्ड क्रियेट ए थॉट `आई ऐम स्टील कम्प्लीट... आई ऐम स्टील कम्प्लीट' देन कम बैक आई ऐम कम्प्लीट। अब भले वो मेरे साथ हैं, हम साथ में सबकुछ कर रहे हैं लेकिन मैंने वो क्रियेट कर लिया है कि ये हैं लेकिन मेरी खुशी इनके ऊपर निर्भर नहीं है। फिर अगर कोई कहेगा भी उसके बारे में या कोई टीका-टिप्पणी भी पास होगी तो भी मैं स्थिर रह सकूंगी। यह मेरा स्वयं के बारे में बिलीफ है कि मैं अपना काम बहुत अच्छी तरह से करती हूँ। अब किसी ने आकर मेरे काम के बारे में कुछ टीका-टिप्पणी कर दी तो मैं तुरंत ही दुःखी हो जाती हूँ। क्योंकि मैं वरिष्ठ हूँ। - क्रमशः

कृष्ण के जन्म की पूर्व तैयारी

मनभावन, मनोहर, मोर मुकुट धारी श्रीकृष्ण का आकर्षण आज भी संसार में चिरस्थायी है। कई बार हम कृष्ण के आकर्षण को तो देखते हैं, लेकिन कई जिज्ञासुओं के अंदर यह प्रश्न भी उठता है कि कृष्ण सतयुग में आए या द्वापर में? इन सारे प्रश्नों में सभी उलझे हुए हैं। लेकिन यह बात तो सत्य भी और प्रमाणित भी है कि चाहे सतयुग में आया या द्वापर में आया, लेकिन आया तो धरती पर ही है ना। आप कृष्ण को इस धरती पर देखना तो चाहते हैं, लेकिन क्या ये धरती कृष्ण के जन्म के लायक है? कहते हैं कि वो तीनों लोकों का स्वामी है, तो क्या वर्तमान संदर्भ में जो मानव की स्थिति है, ऐसी स्थिति में पूरे सृष्टि के स्वामी के आने का कोई औचित्य बनता है? हमारे हिसाब से तो वहाँ, जहाँ पर कृष्ण होंगे, उस दुनिया में सतोगुण की प्रधानता होगी। कभी भी अधर्म, दुःख, और अशान्ति, प्राकृतिक आपदाएँ तथा तमोगुण आदि का नाम-निशान नहीं होगा। उस सर्वोच्च प्रारब्ध को भोगने के लिए सबसे पहले तो हमारे अंदर पूर्णतया देवत्व हो। क्योंकि उनको सम्भालने के लिए उतनी अच्छी स्थिति, उतने ही कृष्ण समान गुणों की प्रधानता होनी चाहिए। अगर आपको ऐसा लोक चाहिए तो कृष्ण की झाँकी के सही अर्थ में जाना चाहिए। अर्थात् हमें अपने अंदर झाँकना है, अपने अवगुणों को परिवर्तित करना है। ऐसा लोक तो सतयुगी लोक ही था क्योंकि सतयुग में ही प्रकृति में भी सतोगुण प्रधान था, सभी मनुष्य भी दिव्य गुण सम्पन्न थे और धन-वैभव भी सभी प्राप्त थे। अतः श्रीकृष्ण का जन्म सतयुग में ही हुआ। इसलिए शास्त्रवादी लोग भी कहते हैं कि श्रीकृष्ण अथवा श्रीनारायण ने सृष्टि के आदि में राजा पृथु के रूप में जन्म लिया और उसने पृथ्वी रूपी गौ को दुहा और इससे सभी वैभव तथा पदार्थ प्राप्त किये। आपने देखा गया।'' वास्तव में उस चित्र का भी भाव यही है कि श्रीकृष्ण ने सतयुग के आरंभ में जन्म लिया था। आप जानते हैं कि संसार को 'सागर' भी कहा जाता है। इस संसार रूपी सागर अर्थात् असीम लोक में मनुष्य सृष्टि मानो पीपल (अश्वत्थ) का एक वृक्ष है। ब्रह्मा और सरस्वती उसके मूल हैं और श्रीकृष्ण उसके पत्ते पर तैर रहे हैं अर्थात् इससे अलिप्त और न्यारे होकर उन्होंने इसमें जीवन व्यतीत किया। पीपल के पत्ते के आकार का भारत खण्ड के मानचित्र के साथ भेंट किया हुआ है। इसीलिए कृष्ण को पीपल के पत्ते पर दिखाया गया है, लेकिन सोचने वाली बात है कि यदि पीपल के पत्ते पर कोई देहधारी लेटे तो क्या वो सागर में तैरता रहेगा? यह सिर्फ प्रतीकात्मक है, जिसकी व्याख्या उपरोक्त लाइनों में की गई है।

अगर आपको ऐसा लोक चाहिए तो कृष्ण की झाँकी के सही अर्थ में जाना चाहिए। अर्थात् हमें अपने अंदर झाँकना है, अपने अवगुणों को परिवर्तित करना है। ऐसा लोक तो सतयुगी लोक ही था क्योंकि सतयुग में ही प्रकृति में भी सतोगुण प्रधान था, सभी मनुष्य भी दिव्य गुण सम्पन्न थे और धन-वैभव भी सभी प्राप्त थे। अतः श्रीकृष्ण का जन्म सतयुग में ही हुआ।

ऐसे भी चित्र देखे होंगे जिनमें कि श्रीकृष्ण को सागर में तैरते हुए पीपल के पत्ते पर चित्रित किया गया होता है। इस विषय में यह भी उल्लेख है कि ''सृष्टि के आदि काल में श्रीकृष्ण को पीपल के पत्ते पर

'क्षीर सागर में यही सत्यता सिद्ध है'

आपने देखा होगा कि भारत में ऐसे भी चित्र उपलब्ध हैं और ऐसा भी वर्णन तथा उल्लेख मिलता है जिनमें कि श्रीनारायण, को क्षीर सागर में शेषनाग पर लेटा हुआ अंकित किया गया होता है। इस चित्र का भी अर्थ यही होता है कि श्रीकृष्ण सतयुग के आदि में हुए थे क्योंकि वास्तव में दूध को अति पवित्र वस्तु माना गया है और दूध खुशहाली तथा सम्पन्नता का भी प्रतीक है और 'सागर' शब्द बहुतायत का भी वाचक है और पवित्रता तथा धन-धान्य की बहुतायत तो सतयुग में ही थी। आप जानते हैं कि जब कोई वस्तु अधिक होती है तो मुहावरे में कहा जाता है कि फलां वस्तु का तो यहाँ सागर है। अतः 'क्षीर सागर' या 'दूध का सागर' सम्पूर्ण पवित्रता तथा सुख-समृद्धि का बोधक है और सागर में शेषनाग पर निश्चिंत भाव से लेटना, चित्रकार की भाषा में इस सत्यता का संकेतक है कि श्रीलक्ष्मी और श्रीनारायण सतयुग के सुखकाल में हुए और उनका राज्य निर्विघ्न, निष्कंटक और अति सुखकारी था। ऐसे मनभावन कृष्ण को देखने के लिए सबसे पहले इस धरती को पवित्र बनाना होगा।